स्कन्दगुप्त नाटक में प्रेम एवं कल्पना समावेश

डॉ. सरोज कुमारी
हिन्दी – विभाग
विवेकानन्द कॉलिज, दिल्ली

सारांशिका

हमारी गिरी दशा को उठाने में हमारे जल–वायु के अनुरुप जो हमारी अतीत–सभ्यता है, उससे बढ़कर उपयुक्त कोई भी आदर्श हमारे अनुकूल होगा या नहीं, इसमें मुझे पूर्ण सन्देह है।''3 निश्चयतः, अतीताधार पर आदर्शों का बखान और स्थापना, कालखण्ड विशेष का गुण–गायन, आदर्शपरक स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य जैसे चरित्रों की प्रतिष्ठा एवं उनसे परिचित कराना, तत्कालीन भारत की गरिमावान् संस्कृति का चित्रण आदि उद्देश्य एकदम इतिहास से सम्बन्धित हैं और गुप्तकालीन भारती की कालखण्ड वाली प्रस्तुत कथा–पात्रादि से उसने यही कराया है–एकदम इतिहासपुष्ट रुप में दिखलाई पड़ता है। स्कन्दगुप्त नाटक में कल्पना या मौलिकता का समावेश दो रुपों में देखने को मिलता है–प्रथम, पूर्णतया नवीन समावेश करके तथा द्वितीयः, आंशिक समावेश अर्थात् इतिहासपुष्ट तत्वों–तथ्यों में आंशिक परिवर्तन करके किया गया है

मुख्य शब्दः प्रेम, कल्पना, आदर्श, अभिव्यक्ति, दिग्दर्शन

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में इतिहास और कल्पना का बहुत सुन्दर समावेश हुआ है जिसके परिणामस्वरुप स्कन्दगुप्त नाटक में इतिहास तथा कल्पना देखने को मिलती है इसलिए नाटक के शरीर में इतिहास के प्राणों का समाहार, जो मुख्यतः सभी अन्य तत्वों की सहायता से व्यक्त हुआ करता है एवं 'सामाजिक' को 'इतिहास–रस' से आप्लावित किया करता है अथवा नाटक और इतिहास का समन्वित रुप जिसमें अनेकांश में सम्यक् कल्पना भी मिलकर 'सामाजिक' के सम्मुख 'सत्याभास' की प्रतिष्ठा किया करती है इसलिए ऐतिहासिक नाटक कहा जाता है। इतिहास, उसका नाटकीय स्वरुप एवं वातावरण इसके–तीन प्रधान तत्व माने गये हैं। यह भी कहा जाता है कि ''कोई भी ऐतिहासिक नाटक न तो 'शुद्ध इतिहास' हो सकता है, न कोरी काल्पनिक कृति। उसमे ऐसा होना चाहिए जिस पर इतिहास तत्व और नाटकीय संरचना दोनों दृष्टियों से विचार किया जा सके।'' वस्तुतः नाटककार ऐतिहासिक नाटक का सृजन अनेक उद्देश्यों से किया करता है यथा वर्तमान को व्यक्त करने हेतु अतीताधार को अथवा अतीताधार की महत्ता को व्यक्त करना, आदर्श कथा–पात्रादि की प्रतिष्ठा, स्वधारणाओं की इतिहास सम्मत अभिव्यक्ति तथा सबसे अधिक सामाजिक को इतिहास–रस से आप्लावित करना होता है। नाटककार कोरा इतिहास न ग्रहण करके प्रायः अपने कल्पनाधिकार का भी प्रयोग किया करता है। नाटककार इस प्रकार कोरे–नितान्त सत्य के स्थान पर सत्याभास कराया करता है। जयशंकर प्रसाद जी इसी श्रेणी के नाटककार हैं। जयशंकर प्रसाद जी के प्रायः सभी प्रमुख नाटक एकदम 'ऐतिहासिक कोटि' के हैं। इसके सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं ('विशाख' की भूमिका में) कहा है–''..... मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशिति अंश में से उन प्रकाण्ड घटनाओं का दिग्दर्शन कराने की है जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया है।'' दूसरी ओर, अपने कल्पना–समावेश वाले नाटककार के अधिकार को भी उन्होंने नहीं छोड़ा है। जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटकों में इतिहास और कल्पना दोनों का सम्यक् समन्वित रुप प्रस्तुत किया है। उनका सुप्रसिद्ध नाटक 'स्कन्दगुप्त' भी इसी श्रृंखला की एक सशक्त कड़ी है।

श्री रत्नशंकर प्रसाद ने स्कन्दगुप्त नाटक के सम्बन्ध में ठीक ही कहा है–''..... लेखक ने इतिहास की पृष्ठभूमि को लेकर केवल रुपक ही नहीं लिखे हैं, प्रत्युत इतिहास की तात्विक विवेचना भी की है।''1 साथ ही, अपने अन्य कई नाटकों की तरह, 'स्कन्दगुप्त' में भी, प्रारम्भिक भूमिका में उन्होंने कथा–पात्र–घटनाचक्रादि के इतिहास सम्मत रुप का पर्याप्त और प्रमाणपुष्ट विस्तृत विवेचन भी किया है, जिसमें नाना इतिहास ग्रन्थों, शिलालेखों अभिलेखों, प्राचीन सिक्कों, बौद्ध ग्रन्थों तथा कथासरित्सागर आदि ग्रन्थों के आधार पर, नाटक में ग्राह्य स्वधारणाओं और कथा–पात्रादि की इतिहास सम्मत प्रामाणिकता की पुष्टि की गई है। प्रथम अध्याय में मगध और मालव राजवंश, खिंगिल–भटार्क, स्कन्दगुप्त तथा मातृगुप्त से सम्बन्धित नाना इतिहास–सामग्री जुटाकर उसका पूरा–पूरा विश्लेषण किया है। यह भी आत्मस्वीकृत दी है कि, ''पात्रों की इतिहास–विरुद्ध सृष्टि, जहाँ तक सम्भव हो सका है, नहीं होने दी गई है, फिर भी कल्पना का अवलम्ब लेना ही पड़ा है–केवल घटना की परम्परा ठीक करने के लिये।''2

'स्कन्दगुप्त' नाटक की कथा गुप्तकालीन भारत और उसमें भी कुमारगुप्त के शासन–काल की है। इस वशं में उत्तराधिकार का नियम अव्यवस्थित था जो कि व्यवहार में, उत्तराधिकारी कोई सा भी पुत्र हो सकता था। बशर्ते कि वह योग्य होना चाहिए। कुमारगुप्त के समय में ही शक और हूण भारतीय सीमान्त पर उपद्रव करने लगे थे तथा इधर देश के अन्दर भी ब्राह्मण–बौद्ध–संघर्ष सिर उठाने लगा था। इसलिए उत्तराधिकार के सन्दर्भ में कुमारगुप्त की छोटी राजरानी और स्कन्दगुप्त की विमाता–अनन्तदेवी–निश्चयतः अपने पुत्र पुरगुप्त को ही राज्याधिकार दिलाना चाहती थी। इसी प्रकार, मातृगुप्त, बंधुवर्मा और गोविन्दगुप्त तथा भटार्क आदि साम्राज्य में उच्चपदस्थ व्यक्ति थे। राज्य में स्कन्दगुप्त परमवीर था और उसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि भी (कालान्तर में) धारण कर ली थी और उससे पूर्व दीर्घकाल तक उनको राज्य–प्राप्ति के लिये अपने सौतेले भाई पुरगुप्त से संघर्ष भी करना पड़ा था। इसी तरह गोविन्दगुप्त; कुमारगुप्त का भाई तथा मालवा का उपरिक था। यहाँ पर भितरी वाले शिलालेख के आधार पर इतना अनुमान किया जा सकता है कि स्कन्दगुप्त ने अपनी माता देवकी को राज–कारागार से मुक्त कराया था। यह सभी कथा–प्रसंग और घटनायें एकदम इतिहासानुकूल और इतिहासपुष्ट हैं जिसको इतिहासकारों ने स्वीकार किया है। कथा की भाँति ही, नाटक के अधिकतर आधिकारिक पात्र भी नाटककार ने इतिहासानुमोदित ही लिये हैं। हमारा तात्पर्य नायक स्कन्दगुप्त, कुमारगुप्त, गोविन्द–गुप्त, पुरगुप्त, अनन्तदेवी और देवकी जैसे

गुप्तवंशीय राजपरिवार के सदस्यों, भटार्क, बन्धुवर्मा, मातृगुप्त तथा खिंगिल आदि गौण चरित्रों से है। इनके चरित्रांकन में जयशंकर प्रसाद नाटककार ने इतिहासानुमोदन पर पर्याप्त ध्यान दिया है। यहाँ पर स्कन्दगुप्त को ही लेते हैं। उसकी वीरता, देश–प्रेम, नाना षड्यन्त्रों और संकटों का सामना करना, मातृभक्ति आदि एकदम इतिहासानुमोदित विशेषतायें हैं। इसी तरह अनन्तदेवी और उनके ग्रुप द्वारा किये गये षड्यन्त्र, बन्धुवर्मा–स्कन्द–सम्बन्ध, देवकी–अनन्तदेवी का पारस्परिक वैमनस्य एवं भटार्क आदि का उच्चपदस्थ होना आदि भी इसी प्रकार के प्रमाण हैं। स्वयं प्रसाद जी के शब्दों में, देखिए ''हमारी गिरी दशा को उठाने में हमारे जल–वायु के अनुरुप जो हमारी अतीत–सभ्यता है, उससे बढ़कर उपयुक्त कोई भी आदर्श हमारे अनुकूल होगा या नहीं, इसमें मुझे पूर्ण सन्देह है।''3 निश्चयतः, अतीताधार पर आदर्शों का बखान और स्थापना, कालखण्ड विशेष का गुण–गायन, आदर्शपरक

स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य जैसे चरित्रों की प्रतिष्ठा एवं उनसे परिचित कराना, तत्कालीन भारत की गरिमावान् संस्कृति का चित्रण आदि उद्देश्य एकदम इतिहास से सम्बन्धित हैं और गुप्तकालीन भारती की कालखण्ड वाली प्रस्तुत कथा–पात्रादि से उसने यही कराया है–एकदम इतिहासपुष्ट रुप में दिखलाई पड़ता है। स्कन्दगुप्त नाटक में कल्पना या मौलिकता का समावेश दो रुपों में देखने को मिलता है–प्रथम, पूर्णतया नवीन समावेश करके तथा द्वितीयः, आंशिक समावेश अर्थात् इतिहासपुष्ट तत्वों–तथ्यों में आंशिक परिवर्तन करके किया गया है। पूर्णतया नवीन समावेशों को देखने पर ज्ञात होता है कि नायक स्कन्दगुप्त–देवसेना और विजया की समस्त प्रेम कथा तथा सत्सम्बन्धी सभी घटना–प्रसंग एकदम कल्पित हैं। इसी तरह, स्कन्दगुप्त को मालव राज्य मिलना, हूणों द्वारा किया गया मालव पर आक्रमण और स्कन्दगुप्त द्वारा उसकी रक्षा किया जाना, स्कन्दगुप्त का हूण आक्रमणकारी खिंगल से कुमा का युद्ध करना, परास्त या असफल होना, कुमा की बाढ़ में बह जाना और जीवित बच जाना, पुनः खिंगल पर विजय प्राप्त कर और उसको क्षमा–दान करके भारतीय सीमाओं से परे खदेड़ देना, स्कन्दगुप्त द्वारा राज्याधिकार अपने सौतेले भाई पुरगुप्त को दिया जाना, अनन्तदेवी के षड्यन्त्रों के फलस्वरुप देवकी की हत्या का प्रयास तथा स्कन्द द्वारा उसको असफल किया जाना, विजया–बन्धुवर्मा–देवसेना–मातृगुप्त और पर्णदत्त आदि द्वारा किये गये जनजागरण और देश अन्ततः स्कन्दगुप्त का एकाकी–असफल रहकर व्रत धारण करना आदि सभी घटनायें एकदम कल्पित हैं। इसी तरह शर्वनाग के पुत्रों की हत्या, देवकी–समाधि पर घटित समस्त घटनायें, विजया की आत्महत्या, धातुसेन द्वारा अनन्तदेवी–पुरगुप्त तथा हूण सेनापति को बन्दी बनाना, पर्णदत्त की मृत्यु आदि घटना–प्रसंग भी आते हैं। इसी तरह देवसेना, विजया, जयमाला, कमला, रामा और मालिनी जैसे नारी–चरित्र एवं पर्णदत्त, चक्रपालित, प्रपंचबुद्धि, शर्वनाग, पृथ्वीसेन, मुदगल, प्रख्यातकीर्ति यहाँ तक की खिंगल नामक हूण आक्रमणकारी आदि तक पुरुष–पात्र एकदम कल्पित और मौलिक समावेश हैं। समस्त राष्ट्रीयता और देश–प्रेम, नारी जागरण और जनसाधारण की जागृति के प्रयास, हिन्दू (ब्राह्मण–बौद्ध) संघर्ष सांस्कृतिक चेतना आदि पूर्णतया काल्पनिक और वस्तुतः समकालीन प्रभावमात्र हैं।

नाटक में आंशिक परिवर्तनों के द्वारा कल्पना–समावेश तो कुमारगुप्त सम्राट का विलासी रुप ही इसका सशक्त साक्षी है। इसी प्रकार, स्कन्दगुप्त की सारी प्रणय कथा है। इसमें असफलताजन्य निराशा और त्याग तथा अन्तर्द्वद्व, उसका हूण–विजेता रुप, अपने को सैनिक मात्र मानकर देश–राष्ट्र का रक्षक होना, भावुक और दार्शनिक प्रवृत्ति वाला होना ही नहीं, राज्य का सच्चा उत्तराधिकार होना तक भी एकदम कल्पित है जो इतिहास के एकदम प्रतिकूल है। आज तक स्कन्दगुप्त को ज्येष्ठ पुत्र और राज्य का वैध अधिकारी घोषित नहीं किया जा सकता है। इसलिए उसका स्वयं पुरगुप्त को राज्यभार प्रदान करना और स्वयं वीतरागी निर्लिप्त बन जाना भी नाटककार की कल्पना का आरोपणमात्र है। इसी भाँति हूण हमलों से मालव और कपिशादि का पददलित होना, मालव–मगध की सन्धि होना, प्रपन्चबुद्धि द्वारा नाना षड्यन्त्र किये जाना एवं कुमारगुप्त की मृत्यु से साथ ही महादण्डनायक–महाप्रतिहार–कुमारामात्य आदि के आत्महत्या विषयक प्रसंग, गोविन्दगुप्त का नागरिकों की रक्षा करना, कुसुमपुर में बन्दिनी देवकी के वध हेतु किये गये प्रयास, प्रपन्चबुद्धि वाला बलि–प्रसंग आदि भी इसी प्रकार के कुछ प्रमाण हैं। नाटक में पर्णगुप्त–गोविन्दगुप्त–भटार्क आदि के पद, यहाँ तक कि मातृगुप्त–कालिदास का एक ही व्यक्ति होना नाटककार की स्वधारणायें हैं।

स्कन्दगुप्त नाटक में एक ओर तो प्रसाद जी की अतिशय इतिहास–निष्ठा और प्रस्तुति–विवेचन–कला सशक्त रुप में मुखरित होकर सामाजिक को इतिहास–रस से आप्लावित कर देने वाले सशक्त रुप से अभिव्यक्त हुई है किन्तु दूसरी ओर, उनकी अद्भुत कल्पना–क्षमता, नाटकोचित मौलिक समावेश तथा युगानुकूल किये गये नाना तथ्यगत परिवर्तनों की प्रस्तुति–क्षमता भी प्रकट हुई है। देखा जाए तो यहाँ पर इतिहास और कल्पना का मणिकांचन योग है। इस सम्बन्ध में डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा कहते हैं कि–''इतिहास का गम्भीर अध्ययन, प्रसंग परिकलन की बुद्धि और उपलब्ध इतिवृत्तों की संगत एकात्मकता स्थापित करने की अदभुत क्षमता प्रसाद में मिलती है। ..... जहाँ तक सम्भव हुआ है, इतिहास की मूल प्रवृत्ति का अनुसरण किया गया है और सुसम्बद्धता स्थापित की गयी है, परन्तु जहाँ कल्पना का प्रयोग नितान्त आवश्यक है, वहाँ नाटककार की स्वतन्त्रता का भी।''4 डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा जी ने स्कन्दगुप्त नाटक के सम्बन्ध में ठीक लिखा है कि–वह भी एकदम सफलतापूर्वक स्कन्दगुप्त नाटक में कल्पना का समावेश हुआ है। इतिहास के साथ–साथ। अतः जयशंकर प्रसाद के नाटकों में बहुत सुन्दर इतिहास एवं कल्पना का समावेश देखने को मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. डॉ. शान्तिस्वरुप गुप्त – प्रसाद के नाटक एवं नाट्यशिल्प पृ. सं. 54

2. जयशंकर प्रसाद – स्कन्दगुप्त नाटक

3. जयशंकर प्रसाद – स्कन्दगुप्त नाटक

4. डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा – प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन पृ. सृ. 68 डॉ.